Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-5 | June-2014 Available online at www. isrj.net

न्यू मीडिया के आयाम और उसकी चुनौतियाँ

एहतिशाम अहमद खान

विभागाध्यक्ष पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ,मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय,हैदरबाद

सारांश **:-** मीडिया की उत्पत्ति ही समाज की बेहतरी के लिए हुआ है । बदलते वक्त के साथ मीडिया नें अपने स्वरूप में भारी परिवर्तन किया है । गली मुहल्ले के नुक्कड़ सभाओं से निकलकर मीडिया आज वैश्विक रथ पर सवार है । जनसंचार के पुराने माध्यम हमारे सामने तो हैं लेकिन नवीन माध्यमों के आ जाने से मीडिया के स्वरूप में भारी परिवर्तन आया है । न्यू मीडिया का ये नया स्वरूप निश्चित तौर पर तेज ,आकर्षक और चमत्कारी है लेकिन इन सब विशेषताओं के बावजूद न्यू मीडिया के कारण हमारे सामने अनेक समस्याओं का जन्म भी हुआ है ।

प्रस्तावना :

न्यू मीडिया के कारण ही सूचना के एकतरफा बहाव पर काफी हद तक रोक लगी है । पहले हम उन्हीं पाँच बड़ी समाचार एजेंसियों पर (एएफ़पी फ्रांस ,रायटर यूके,तास रूस, एपी यूएसए) काफी हद तक निर्भर रहा करते थे लेकिन वर्तमान में पहले वाली स्थिति नहीं रही । न्यू मीडिया के प्लैटफ़ार्म से हम सूचना को बगैर कुछ ज्यादा खर्च किए हुए इधर से उधर पहुँचा सकते हैं । अरब क्रांति से लेकर अन्ना आंदोलन तक न्यू मीडिया नें अपनी ज़ोरदार उपस्थिति दर्ज कराई है । निर्भया कांड के बाद देश में नये माध्यम पर गंभीर बहस,सेमिनार आदि हो रहे हैं ।

इस न्यू मीडिया में तमाम तरह की विशेषता होने के बाद भी इसके कई सारे पहलुओं पर विमर्श करना आवश्यक है । इस माध्यम में गेटकीपिंग की पर्याप्त व्यवस्था न होने कारण इसका बड़े पैमाने पर दुरुपयोग हो रहा है । अगर यहाँ पर वैश्विक न हो कर देश की बात की जाये तो असम से उत्तर प्रदेश तक अशांति में इसका बड़ा योगदान माना जा रहा है । इसलिए इस माध्यम के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं पर गंभीर विमर्श आवश्यक है ।

वर्तमान युग में जनसंचार के नए माध्यम सोश्ल मीडिया की लोकप्रियता से इंकार नहीं किया जा सकता है । कम्प्युटर और इंटरनेट के बढ़ते प्रभाव नें मानों इसमें और पंख लगा दिये हों । कम्प्युटर और इंटरनेट के रथ पर सवार इस नवीन मीडिया नें यू-ट्यूब ,ब्लॉग,फेसबूक,न्यूज़ पोर्टल ,ट्वीट्टर नें अपनी कामयाबी के नए प्रतिमान स्थापित किए हैं ।

मीडिया के वर्तमान संदर्भ की अगर बात कि जाये तो इसमें कोई संदेह नहीं कि गेटकीपपिंग का मामला सबसे महत्वपूर्ण है । हम रोज़ाना इस तरह की ख़बरों से रूबरूँ हो रहे हैं कि तथाकथित मुख्यधारा की मीडिया एक एजेंडा सेटिंग की तरह ख़बरों को हमारे सामने पेश कर रही हैं लेकिन यही नवीन मीडिया है जिसके द्वारा अनकही और अनछुई खबरें भी हमारे सामने आपा रहीं हैं ।

पिछले दो-तीन सालों में दुनिया नें कुछ गंभीर प्रकार के जनांदोलन देखें हैं । अरब क्रांति से लेकर ,वाल स्ट्रीट पर कब्ज़ा करने वाले हंगामें से लेकर देश में हुए जनलोकपाल के लिए आंदोलन । सभी जनादोलनों में नवीन माध्यम नें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । सरल शब्दों में में कहा जाये तो इस नवीन माध्यम नें इस आंदोलनों को संचालित करने का काम किया है ।

विकिलिक्स के खुलासे ने तो पूरी दुनिया में एक तरह से भूचाल ही लाकर रख दिया था और तथाकथित मुख्यधारा की मीडिया का ये भ्रम भी थोड़ा कि उसकी मीडिया के अन्य माध्यमों में वाचडॉग की भूमिका है । तमाम स्थापित माध्यमों जैसे प्रिन्ट ,इलेक्ट्रॉनिक के होते हुए भी नवीन माध्यम नें अपनी महत्वपूर्ण और अमेरिका को पूरी दुनियाँ बेनकाब किया । इस मत से दुनिया के करीब-करीब सभी संचारविद् इत्तिफाक़ रखते हैं कि अगर विकिलिक्स की खबर को अगर दूसरे माध्यमों मे द्वारा फैलाने की कोशिश कि गई होती हो ,तो मुमकिन था कि उसकी सौदेबाजी हो गई होती और वो खबर दुनियाँ के सामने नहीं आ पाती । नवीन माधायम की वजह से इस खबर को पूरी दुनियाँ के लोगों नें देखा भी और इसका यथासंभव प्रसार भी किया ।

नवीन माध्यम का एक तकनीकी माध्यम होने के कारण भारत जैसे पिछड़े और विकासशील अभी इसकी पहुँच कम है ,जिससे इसके द्वारा मिलने वाली चुनौतियाँ भी कम हैं मगर विकसित देशों में नवीन माध्यम का असर इतना बढ़ गया है कि कई बड़े समाचार पत्रों की मुद्रण प्रति को बंद करना पड़ा है ,पाठकों के लिए अब वो सिर्फ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है ।

नवीन माध्यम के द्वारा की जाने वाली पत्रकारिता की प्रमाणिकता अभी संदिग्धता के दायरे में है । खुला मंच होने के कारण इस पर द्वारपाल की भूमिका स्पष्ट नहीं हो पा रही है । कहाँ से ख़बरों को रोका जाये अभी भी चिंता का विषय है ?

नवीन माध्यम के प्रकार-

यू-ट्यूब-वर्तमान दौर का सबसे लोकप्रिय माध्यम ,ये दुनिया की सबसे बड़ी सर्च इंजन गूगल के द्वारा संचालित है । इसकी शुरुआत नवंबर ,2006 से है। अपने शुरुआत से ही इसकी लोकप्रियता चरम पर पर है । इस सामाजिक साइट्स के करोड़ों विडियो क्लिप उपलब्ध है । दुनिया शायद ही कोई संगीत हो,जो यहाँ उपलब्ध न हो लेकिन हालिया वर्षों में हमें ये भी देखने में आया है कि कुछ शरारती तत्वों द्वारा कुछ आपत्तिजनक सामग्री भी लोड कर दी जाती है । जिससे मामला बहुत गंभीर हो जाता है ।

ब्लॉग-

'ब्लॉग' वेब लॉग का छोटा रूप है । इसकी शुरुआत 1997 में हुई । पीटर मरहोत्ज़ नें 1999 में पहली बार ब्लॉग शब्द का इस्तेमाल अपनी निजी वेबसाइट पर किया । शुरुआती दौर में ब्लॉग चलाना थोड़ा मुश्किल था ,लेकिन बाद में ये काफी आसान हो गया । पहले ब्लॉग को चलाने के लिए एचटीएमएल का जानकार होना

आवश्यक था लेकिन बाद में यूनिकोड के विकास नें पूरे मामले को आसान कर दिया । आज दुनिया के तकरीबन सभी भाषाओं में ब्लॉग लिखे जा रहे हैं । प्रस्तुति और विषयवस्तु की दृष्टि से भी ब्लॉग काफी समर्थ है । उच्च कोटी के लेख ,समसामयिक मुद्दों पर व्यापक जानकारी ,विज्ञान प्रयोगिकी से लेकर ज्योतिष आदि विषयों पर हज़ारों पृष्ठों की सामग्री उपलब्ध है ।

ट्विटर-

ये माध्यम भी संदेश को पढ़ने और भेजने की सुविधा उपलब्ध कराता है । वर्तमान में ट्विटर के महत्व का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि करीब-करीब सभी मीडिया संस्थानों में ऐसे कर्मचारी रखे जा रहे है जो इस बात का पता लगाये आज किस-किस नेता अभिनेता नें ट्विटर पर क्या-क्या पोस्ट किया है । वर्तमान में नेताओं और अभिनेताओं का ट्वीट करना एक फ़ैशन बन गया है । ट्विटर 140 शब्दों से ज्यादा में संदेश भेजने की अनुमति नहीं देता है ।

आर्कुट-

इस सामाजिक साइट को गूगल द्वारा संचालित किया जा रहा है । इस साइट पर पहले अकाउंट खोलने के लिए ये आवश्यक होता था कि कोई आपको इसका निमंत्रण दे लेकिन 2006 में ये व्यवस्था समाप्त कर गई । आर्कुट उपभोक्ता के मामले भारत विश्व में दूसरे स्थान पर है ।

विकिपीडिया-

इंटरनेट आधारित इस मुक्तकोष की शुरुआत 2001 से हुई । शुरू में इस साइट पर सिर्फ अंग्रेजी में ही सामग्री उपलब्ध हुआ करती थी ,लेकिन यूनिकोड के प्रचलन में आने के बाद अब सभी भाषाओं में ये उपलब्ध है । ये साइट जीएनयू सॉफ्टवेर लाइसेंस के अंतर्गत काम करता है । ये साइट इस बात की सुविधा प्रदान करता है कि पाठक चाहे तो इसमें प्रामाणिक बदलाव कर सकता है लेकिन तथ्यों में हेर-फेर होने की स्थिति में उसे पुनः बदला भी जा सकता है ।

फेसबुक-

फेसबुक को मार्क जुकरबर्ग का करिश्मा माना जाता है । इसका इस्तेमाल कोई भी व्यक्ति कर सकता है । इस सोश्ल साइट के माध्यम से कोई भी व्यक्ति किसी से भी अपने राय को साझा कर सकता है । एक तरह से ये सामाजिक साइट जनसंचार के कनवरजेंस मॉडल पूरा करता हुआ दिखता है । इस सामाजिक साइट के माध्यम से व्यक्ति अपनी राय को लिखित ,दृश्य माध्यम,श्रव्य माध्यम एवं दृश्य- श्रव्य आदि माध्यमों से अपने विचार प्रकट कर सकता है ।

इस सच्चाई से भी अब इंकार करना मुश्किल है कि वर्तमान युग नवीन मीडिया का है इसको अब दबाया नहीं जा सकता है और इसकी शक्ति दिनो-दिन बढ़ती ही जाएगी ।

वर्तमान में नवीन मीडिया का दखल हमारे दैनिक जीवन में और बढ़ेगा ही ,हमें नवीन मीडिया की आलोचना के बजाए उस माध्यम में हम किस तरह से सुधार कर सकते या बदलाव कर सकते हैं , इस पर विचार होना चाहिए ।

यू-ट्यूब हो या फेसबुक या कोई अन्य सामाजिक साइट ,यहाँ पर बिना किसी गेटकीपपिंग की सामग्री उपलब्ध करवा दी जाती हैं ,यहीं पर हमें सावधान रहने की आवश्यकता है । कोई-न-कोई व्यक्ति या संस्था इस बात की जिम्मेरदार हो कि कोई अवांछित सामग्री यहाँ पर लोड न होने पाये । हालिया दिनों में कुछ इस तरह की घटनाएँ घटी हैं जिससे हमारी साझी विरासत और सामाजिक ताने-बाने पर असर पड़ा है । यहाँ पर हमें सचेत रहने की आवश्यकता है ।

संदर्भ ग्रंथ

1-पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा-आलोक मेहता
2-समकालीन संचार सिध्दांत-सुस्मिता बाला और अंबरीष सक्सेना
3-मीडिया विमर्श-दिसंबर-2013, सितंबर-2013 मार्च-2011
4-मीडिया शोध-डॉ मनोज दयाल
5-भारत में संचार और जनसंचार-प्रो-जे.वी.विलानिलम अनुवाद-डॉ शशिकांत शुक्ला